भूमण्डलीकरण का सम्प्रभुता पर प्रभाव

Globalization एक ऐतिहासिक महत्व की घटना है जिसने सम्पूर्ण विश्व के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है राष्ट्र राज्य भी इससे अछूता नहीं है। भूमण्डलीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया या सामाजिक आन्दोलन की ओर इंगित करती है जिसके परिणाम स्वरूप समय एवं दूरी की सीमा महत्व हीन हो गया है। राष्ट्रों की सीमाएं महत्व हीन हो जाती है विश्व एक ग्राम में परिवर्तित हो जाता है भूमण्डलीकरण अत्यन्त जटिल आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी परिवर्तनों से जुड़ी प्रक्रिया है जिसके सामाजिक सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक मूल्यात्मक एवं राजनीतिक प्रभाव देखे जा सकते है।

~~अंतर्राष्ट्रीय~~ अंतरराष्ट्रीयवाद और भूमण्डलीकरण एक दूसरे से जुड़े हुए है भूमण्डलीकरण अंतरराष्ट्रीयवाद का अगला चरण है जहाँ अंतरराष्ट्रीयवाद में ~~सम्प्र~~ राष्ट्र-राज्य उपस्थित होते है। तथा केवल बाह्य सम्प्रभुता पर समझौता किया जाता है। ~~जबकि~~ वहीं भूमण्डलीकरण से आन्तरिक और बाह्य सम्प्रभुता दोनों ही सीमित होती है।

राजनीतिक सिद्धान्त ने भूमण्डलीकरण को भिन्न रूप से परिभाषित किया गया है भूमण्डलीकरण का सिद्धान्त

उत्तर आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त की विशेषता है यह उत्तर पूंजीवादी समाज तथा सूचना समाज Information Society की विशेषता है Keohane कोहेन, Nye ने, भूमंडलीकरण को जटिल आर्थिक अन्त: निर्भरता मॉडल से स्पष्ट किया है मार्शल मैकलुहान ने विश्व ग्राम की संकल्पना किया Laipard ने विश्व राजनीति का मकड़ जाल मॉडल Cob web परिकल्पित [illegible] Talk

विश्व नागरिक समाज, बर्टन ने पुरानी राष्ट्र-राज्य व्यवस्था की जगह विश्व समाज की संकल्पना किया है।

भूमण्डलीकरण का सम्प्रभुता पर प्रभाव =

Treaty of West faliya की संधि के द्वारा राष्ट्र राज्यों पर आधारित विश्व व्यवस्था को मान्यता दी गई इस व्यवस्था की भिन्न विशेषताएं थी। प्रादेशिक सम्प्रभुता आंतरिक सम्प्रभुता कह सकते हैं अर्थात राष्ट्र की सीमा के अन्दर राज्य सर्वोच्च निर्णयकारी संस्था है।

बाहरी सम्प्रभुता – अन्य विदेशों से सम्बन्ध निर्धारित करने में राज्य स्वतन्त्र है।

वैधानिक रूप से परिभाषित इस विश्व व्यवस्था व्यवहार में कभी भी नहीं पायी गयी।

आन्तरिक और बाह्य दोनों ही तरहों में सम्प्रभुता पर कई सीमाएं रही हैं भूमण्डलीकरण के परिणाम स्वरूप विश्व में अनेक ऐसी प्रवृत्तियों और संस्थाओं तथा व्यवस्थाओं का जन्म हुआ जिसने पहले की तुलना में सम्प्रभुता को कहीं अधिक सीमित किया। उपरोक्त प्रभाव प्रवृत्तियों और व्यवस्थाओं का विश्लेषण निम्न आधार पर किया जा सकता है।

① भूमण्डलीकरण के परिणाम स्वरूप अनेक भौतिक परिवर्तन हुए जिसने राष्ट्रों की बाह्य और आंतरिक सम्प्रभुता को प्रभावित किया है।

① संचार प्रौद्योगिकी :- संचार प्रौद्योगिकी भूमण्डलीकरण का कारक है संचार प्रौद्योगिकी के परिणाम स्वरूप राज्यों की भौगोलिक सम्प्रभुता महत्व हीन हो चुकी है ~~sat~~ सेटेलाइट इन्टरनेट जैसी प्रौद्योगिकी चलते किसी भी राष्ट्र की आंतरिक व्यवस्था को जाना जा सकता है राज्य किसी और बाह्य प्रभाव को रोक नहीं सकता इस प्रकार राज्य की सम्प्रभुता सीमित हुई है, राज्यों और सम्प्रभुता को खतरा पहुंचा है। राज्य अपनी संस्कृति को बाह्य प्रभावों से अलग रखने की स्थिति में नहीं है राष्ट्र - राज्य पर सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति का किस स्तर पर प्रभाव हो

सकता है यह सोवियत संघ के विघटन से जाना जा सकता है।

आर्थिक कारक :- भूमण्डलीकरण को स्थापित करने वाले कारकों में आर्थिक कारक का महत्वपूर्ण है। भूमण्डलीकरण का सबसे अधिक प्रभाव आर्थिक क्षेत्र में देखा जा सकता है। आज विभिन्न राष्ट्र अपनी आर्थिक नीतियों का निर्माण स्वयं नहीं करता वरन् बहुराष्ट्रीय संस्थाओं जैसे W.T.O. I.M.F. आर्थिक नीतियों का निर्धारण करते हैं इस प्रकार राज्यों की संप्रभुता में कमी आयी है।

सामाजिक क्षेत्र में :- सामाजिक क्षेत्र में राज्यों के प्रभुत्व में कमी आयी है। आज सामाजिक लोगों में उभरे नए सामाजिक आंदोलन जैसे मानवाधिकार आन्दोलन, महिला आन्दोलन, पूर्व औपनिवेशिक की विचारधारा के कारण बेहतर रूप से संगठित हुए हैं। भूमण्डलीकरण ने सामाजिक नीतियों में हस्तक्षेप के अवसर दिये हैं। भूमण्डलीकरण से जुड़ी कतिपय विचारधारायें जैसे उत्तर-औपनिवेशिक करण, मानवाधिकार, बहुसंस्कृतिवाद भी राज्यों की संप्रभुता को सीमित करते हैं।

अमरीकीकरण के परिणाम स्वरूप कुछ समस्याएं वैश्विक स्वरूप ले चुकी हैं जैसे, आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी अंतर्राष्ट्रीय अपराध, अब किसी एक राष्ट्र के माध्यम से विजय नहीं पा जा सकती है।

नाभिकीय अस्त्रों, रासायनिक हथियारों के विकास, अन्तर महाद्वीप मिसाइल जैसी युद्ध प्रौद्योगिकी के कारण प्रादेशिक सम्प्रभुता भी सीमित हुई है। ये समस्याओं के समाधान के लिए की गयी संधियां, N.P.T. C.T.B.T. या पर्यावरण के क्षेत्र में की गयी संधियां प्रौद्योगिकी किसी न किसी रूप में राज्यों की सम्प्रभुता को बाधित करते हैं

निष्कर्ष = अमरीकीकरण ने निःसन्देह राष्ट्रों की सम्प्रभुता को काफी हद तक सीमित किया है कई मामलों में कई राष्ट्रों का अस्तित्व भी समाप्त हो गया जैसे, सोवियत संघ, यूगोस्लाविया। कई राष्ट्रों में राष्ट्र विरोधी आंदोलन देखा जा सकता है। करसीका जैसे राष्ट्र राज्यों की वैधता पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं परन्तु यह नहीं कहा

जो स्वतंत्र थे राष्ट्र राज्य समाप्त हो गये हैं। राष्ट्रों का विघटन हुआ और नये राष्ट्रों का जन्म भी हुआ। इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्ट्रवाद से बढ़कर और राष्ट्रवाद से शक्तिशाली [illegible] विचार धारा आज तक कोई नहीं है।